साठोत्तरी कहानियों की विशेषताओं को लिखिए।

(1) नयी कहानी की विशेषताओं को लिखते हुए नयी कहानीकारों के सम्बन्ध में लिखें?

सन् 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ। खुशी की एक लहर चारों ओर दौड़ गई। 1952 ई० में भारतवर्ष के इतिहास में एक महत्वपूर्ण वर्ष है। इसी वर्ष भारत में प्रथम आम चुनाव हुआ। विधिवत अपनी सरकार की स्थापना हुई परन्तु स्वतंत्रता के चार पाँच वर्षों के बाद आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार, जमाखोरी, चाटुकारिता, भाई भतीजावाद, नेतृत्व का विघटन लोभ जाति से वह, इस जाति से शायद सुरक्षों ने अपना मुँह न बढ़ाया होगा। जनता के रामराज्य के स्वप्न चकनाचूर हो गए। इन का स्थान भंग हुआ। चिन्तन मंच एवं बदलती हुई मान्यताओं ने अनेक स्थितियाँ पैदा की। सन् 1951 ई० में जगदीश गुप्त ने 'नयी कहानी' कविता की संज्ञा दी।

सन् 1956 ई० हिन्दी कहानी के विकास में एक महत्वपूर्ण वर्ष है। कहानी नववर्षांक निकला। इसके सम्पादक भैरव प्रसाद गुप्त थे। 'कहानी' नववर्षांक 1956 इसलिए भी उल्लेखनीय है कि इसी में पहली बार स्पष्टतः 'नयी कहानी' की बात उठायी गई। इसी समय नई कहानी एक स्वतंत्र विधा के रूप में उभरी। नई कहानी एक आंदोलन का सूत्रपात हुआ जिसमें पुरानी कहानियों के पुरानेपन के स्थान पर और नवीन भावबोध की नूतन शैली में अभिव्यक्ति का आग्रह था। इस कहानी के इस नये रूप के प्रवर्तन का श्रेय सम्मिलित रूप से मोहन राकेश, कमलेश्वर तथा राजेन्द्र यादव को दिया जा सकता है। किन्तु लब्ध प्रतिष्ठित कथाकारों को पुराने कथाकार के रूप में जानते हैं। उनकी कृतियों में भी कहानी के नवोन्मेष का संकेत पाया जा सकता है। इन कथाकारों में जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, अश्क, विष्णु प्रभाकर, भैरव गुप्त, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, प्रभाकर माचवे, अमृतराय, इलाचन्द्र जोशी आदि के नाम लिये जा सकते हैं। डॉ० बच्चन सिंह ने डॉ० शिवप्रसाद सिंह की दादी माँ कहानी को नई कहानी का प्रथम प्रयोग माना है। डॉ० नामवर सिंह निर्मल वर्मा की 'परिंदे' कहानी को प्रथम नई कहानी मानते हैं। सुरेन्द्र सिन्हा ने राजेन्द्र यादव को नयी कहानी के आंदोलन का प्रवर्तक माना है।

Scanned with CamScanner

पुराने कहानीकार स्वतंत्रता के बाद भी लिखते [रहे] लेकिन उनमें नये युग की नयी परिस्थितियों [से] तादात्म्य करने की क्षमता नहीं थी। नये युग [के] मन में सुलगती आग को कुरेदने में असमर्थ [रहे] क्योंकि उनमें न नया भाव-बोध था न न[या] दृष्टि-बोध। युग बदला; पुराने मूल्य बदले, नई मान्यताओं एवं स्थापनाओं ने नवीन विचा[र] दृष्टिकोण का विस्तार किया गया एवं शिल्प की दृ[ष्टि से] भी कहानी में परिवर्तन हुआ। पाश्चात्य सा[] हित्य के सम्पर्क से अनेक वादों विचारधाराओं से परि[चय] पूर्ण बढ़ा। फ्रायड एवं मार्क्स के अतिरिक्त सार्त्र एवं काफ्का का भी प्रभाव पड़ा।

नये युग में तकनीकी की प्रगति के कारण मारी भारी मशीनों तथा बड़े-बड़े हथियारों ने अस्तित्व का संकट उत्पन्न कर दिया है। भय, कुंठा, आशंका, निराशा, घुटन, अजनबीपन आदि प्रवृत्तियाँ उभर कर मानव मन को मथने लगीं। भ्रष्टाचार का दानव सर्वत्र नंगा नृत्य करने लगा। मनुष्य की विवशता बढ़ती गई। वह विचित्र तनाव की स्थिति भोगने के लिए बाध्य हुआ। पुराने ध्वस्त होने लगे, नया कहानीकार नये मूल्यों की तलाश के लिए बेचैन हुआ। मोहन राकेश की कहानी 'एक और जिन्दगी' में इसी स्थिति का चित्रण हुआ है।

नये कहानीकारों ने छोटा आयोजन द्वारा बदलते हुए जीवन को पकड़ने एवं व्यक्त करने का दावा किया। नई कहानी ने सामाजिक सम्बन्धों के बदलाव को लक्ष्य कर व्यक्ति को पूरे परिवेश की समग्रता में विश्लेषित करने का प्रयास किया। व्यक्ति की विशेष मनःस्थिति और उसकी चारित्रगत असंगतियों को उजागर किया। मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का उद्घाटन एवं यौन भाव का उन्मुक्त चित्रण नई कहानी के लक्षण हैं। नये कहानीकारों का दावा है कि वे अनुमान या कल्पना के आधार पर नहीं लिखते वे अपने अनुभव की प्रामाणिकता की पूँजी समझते हैं। वे भोगे हुए यथार्थ को अभिव्यक्त देते हैं। नई कहानी किसी व्यक्ति या वर्ग विशेष की सम्पत्ति नहीं है वह तो आज की

ज़िन्दगी की वास्तविकता का चित्रण करती है। यह युग बोध के साथ-साथ सजग भाव-बोध की कहानी है।

नयी कहानी के पात्र ही सब कुछ हैं। कथाकार यहाँ विचारक या आलोचक रूप में प्रकट नहीं होता। राजेन्द्र यादव कहते हैं —
"कथाकार जीवन को उसकी समग्रता में देखने का आग्रह करता है। जीवन का सामाजिक परिवेश, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व तथा व्यवहारिक जीवन के तनावों और आवश्यकताओं को एक संश्लिष्ट प्रक्रिया के रूप में पाना चाहता है।" अर्थात नयी कहानी वर्तमान युग के जीवन को समग्र रूप में चित्रित करती है। यदि राजेन्द्र यादव की उपर्युक्त कथन को प्रमाण मान लिया जाय तो नयी कहानी और पुरानी कहानी का वाद-विवाद ही न हो। क्योंकि जीवन में निराशा, कुंठा, अजनबीपन भी है और आकस्मिक चमत्कार भी। नयी कहानी के पक्षधरों के अनुसार उसकी निम्नांकित विशेषताएँ हैं —

1. नई कहानी में चरमसीमा नहीं होती। वह एक विशेष मनःस्थिति को स्थापित मात्र करती है।
2. नयी कहानी में चौंकाने वाली आकस्मिकताओं का कुतूहल, जटिल जिज्ञासा का अभाव होता है।
3. नयी कहानी शिल्प पक्ष में भी नवीनता है उसमें अवचेतन, अर्द्धचेतन, प्रतीकों, संकेतों, बिम्ब रचनाओं एवं बिम्बों की बहुलता रहती है।
4. नयी कहानी में कथानक का कोई महत्व नहीं है।
5. समाज, धर्म, नैतिक आचार विचारों के प्रति विद्रोह की अभिव्यक्ति नयी कहानी का लक्ष्य है।
6. नयी कहानी सामाजिक परिस्थितियों से नहीं जोड़ी उन परिस्थितियों के प्रभावों को लेकर लिखी जाती है।
7. उसमें मध्यवर्गीय जीवन की कटुता, वर्जनाओं और कुंठाओं का प्रायः चित्रण होता है।
8. वह यथार्थवादी दृष्टि लेकर चलती है। सामाजिक अनुभूति के किसी भाषा को पारिभाषिक अभिव्यक्ति देने में कोई संकोच नहीं करती।

नयी कहानी में महत्वों के साथ नागरिक जीवन की भी पुकार, दर्द, घुटन

औ॰ आ॰ [illegible] ने बिना आपकी के
हस्ताक्षर, कब्जा [illegible] नहीं है [illegible]
[illegible] ॥